

15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31			

अलग ही तो हेतु उजमें नहीं रह
सकता।

ब) ध्वलपाषण्डि — यहाँ पत्र तो अलग
नहीं है, किन्तु हेतु
का लक्षण ही लता है कि वह पत्र
में नहीं रह सकता जैसे शब्द हय
धने के काल अक्रिय है यहाँ
शब्द हय नहीं हो सकता क्योंकि
वह प्रत्य है।

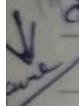
ग) व्याप्यवाषण्डि — यहाँ हेतु सांपाधिक धन
है जैसे - पूर्वत बुद्धिमान
धने के काल धुमवात्र है यहाँ यहाँ
आदि धुम की व्याप्ति नियत नहीं है
क्योंकि लोहे के जलते गोल में वही
है किन्तु धुम नहीं है। वही आदि
धुम की व्याप्ति आदि-धनपयोग रूपी
उपाधि के काल सांपाधिक है क्योंकि
शिली लकड़ी के जलने पर ही अक्रिय
से धुम उत्पन्न होता है। अतः हेतु
सांपाधिक धन से व्याप्यवाषण्डि है।

घ) वाषित — पाँचवाँ हेतुवाश बाधित है।
जिब हेतु के साध्य को भाव
अथ प्रमाण ब्रह्म सिद्ध है वह साध्य
जैसे - वही हय धने के काल शीतल
हय हेतु और शीतल साध्य है।

Wk	M	T	W	T	F	S	S
13	30						1
14	2	3	4	5	6	7	8
15	9	10	11	12	13	14	15
16	16	17	18	19	20	21	22
17	23	24	25	26	27	28	29

Wk	M	T	W	T	F	S	S
18							
19	7	8	9	10	11	12	13
20	14	15	16	17	18	19	20
21	21	22	23	24	25	26	27
22	28	29	30	1	2	3	4

यह शीलता का अभाव अति न के
 उस उच्च स्तर के प्रत्यक्ष रूप कि हरे
 अतः यह हेतु वाचित है वाचित
 में साध्य भाव अन्य उपाय भाव
 सिद्ध होता है। विच्छेद में स्वयं हेतु
 ही साध्य भाव को सिद्ध करता है
 सब परिपन्न में साध्य भाव अन्य हेतु
 द्वारा सिद्ध होता है।



उदाहरण - यदि अति शीलता
 स्यात् कि यह एक इच्छा है, यद्यपि शील
 साध्य है अतः इच्छा हेतु हेतु यह
 अनुगत सही नहीं है स्यात् कि एक स्पर्श
 शक्ति से अति न केवल शीलता
 का अभाव ही नहीं पाते बल्कि उच्चतर
 का स्पर्श अनुगत पाते हैं इस तरह
 देखने से कि हेतु इच्छा के द्वारा ही
 अनुगत सिद्ध किया जाता है वह
 प्रत्यक्ष से वाचित है जाना है, अतः
 इसी अनुगत का हेतु यदि अन्य कि
 उपाय से वाचित होता है अन्य कि
 अनुगत दोषपूर्ण होता है वृद्ध
 हीन का वाचित होता है अतः उच्च
 कहेत है।